SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

i;koj.k d çfr tkx:drk mRiUu djus e f'k{kdk dh Hkfedk

txnEck flag (Ph.D.), प्राचार्य,
एलिट पब्लिक बी.एड. कॉलेज, चियांकी, डालटनगंज झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
txnEck flag (Ph.D.), प्राचार्य,
एलिट पब्लिक बी.एड. कॉलेज, चियांकी, डालटनगंज झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/10/2022
Revised on : -----
Accepted on : 18/10/2022
Plagiarism : 02% on 11/10/2022

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 2%
Date: Oct 11, 2022
Statistics: 27 words Plagiarized / 1261 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

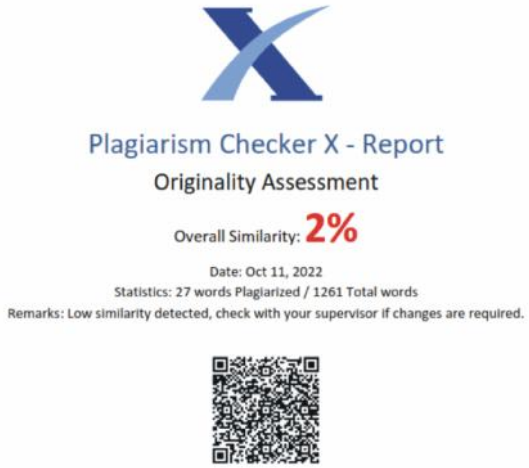

'kks/k lkj

पर्यावरण है हम सबकी जान, इसलिए हम सभी करे इसका सम्मान। परि+आवरण जो हमारे चारो ओर है, जो हमे चारों ओर से घेरे हुए है। सामान्य अर्थो में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। पर्यावरण के जैविक घटकों मे सभी जीव–जन्तु और पेड़, पौधे आते है, वही अजैविक घटकों में जीवन रहित तत्व जैसे चट्टाने, पर्वत, नदी, हवा और जलवायु आदि शामिल है। हमारे आस–पास की प्रत्येक वस्तु जड़, चेतन और प्राणी हमारा रहन–सहन, खान–पान, संस्कृति विचार सभी कुछ पर्यावरण के अंग है। पर्यावरण प्रकृति का वह घटक है जो मानव जीवन से संबंधित है और उसे प्रभावित करता है।

eq[; 'kCn

i;koj.k] tkx:drk] f'k{kd·

çLrkouk

जनसंख्या में अत्याधिक वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण की ओर तेजी से बढ़ते कदम, ऊर्जा की बढ़ती जरूरतों तथा वैज्ञानिक विकास के फलस्वरूप पर्यावरणीय संसाधनो का ह्रास हुआ है।

पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ा है, पर्यावरण को अब तक हुए नुकसान को तब तक नही बदला जा सकता जब तक हम सामूहिक रूप से इस वृहद समस्या पर विचार करके इसके निराकरण के प्रयास न करे। इसके लिए लोगो मे जागरूकता लाए जाने तथा उनकी भागीदारी आवश्यक है ताकि उनकी सोच में बदलाव लाकर पर्यावरण को क्षति होने से बचाया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनो को संरक्षित रखने की समझ के बिना और ऐसा करने की आवश्यकता महसूस होने पर ही

कुछ व्यक्तियों को पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित हो सकेंगे। पर्यावरण एवं प्रकृति एक ही सिक्के के दो पहलू है। प्रकृति जो हमे जीने के लिए स्वच्छ वायु, पीने के लिए साफ शीतल जल और खाने के लिए कंद–मूल फल उपलब्ध कराती रही वही अब संकट मे है। शहरी हवा मे सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसो की मात्रा हाइड्रो–कार्बन के साथ बढ़ रही है, वही ओजोन की परत भी कम होती जा रही हैं।

विकास की आंधी में मिट्टी भी प्रदूषित हो चुकी है। खेतो मे ज्यादा से ज्यादा उपज लेने की चाह मे किए गए रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण ज्यादातार भूमि बंजर हो चुकी है। हमारे कई सांस्कृतिक त्योहार एवं रीति रिवाज भी पर्यावरण हितैषी नही है। दीपावली और विवाह के मौके पर की जाने वाली आतिशबाजी हवा को बहुत ज्यादा प्रदूषित करती है।

i;koj.k vè;;u dk mís';

- पर्यावरण के सुधार और संरक्षण के लिए उपायों का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग करना।
- पर्यावरणीय समस्याओं के बारे लोगो को जागरूक करना।
- जैव विविधिता के संरक्षण के लिए आधुनिक पर्यावरण अवधारणा को स्पष्ट करना।

f'k{kdksa dh Hkwfedk

पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार के अभियान को व्यापक तौर पर चलाने के लिए पूरी समाज की जवाबदेही एवं जिम्मेदारी है किन्तु शिक्षक समाज का एक महत्वपूर्ण सदस्य है इसलिए इस लक्ष्य की प्राप्ति में उसकी भूमिका विशेष रूप से मानी गयी है। शिक्षक का सम्बन्ध विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों से होता है। एक पथ प्रर्दशक की भाँति वह समाज की विविध समस्याओं से उन्हे अवगत कराकर उनका नवीन एवं सफल समाधान ढूँढने हेतु छात्रों को प्रेरित कर सकता है।

शिक्षक इस समस्या विशेष के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने मे विशेष भूमिका निभा सकता है।

शिक्षको द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के तहत किए गए कार्यः

- पर्यावरण संरक्षण से संबंधित क्रियाकलापो के माध्यम से स्कूली बच्चो मे जागरूकता विकासित किया जा सकता है।
- बच्चों को पर्यावरण और इससे जुड़ी समस्याओं से परिचित कराना।
- स्कूल के बच्चों को पर्यावरण शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराकर।
- समाज को जागरूक करने मे स्कूली शिक्षको एवं बच्चो को भागीदार बनाकर।
- समाज की पर्यावरणीय समस्याओं से सीधे सम्पर्क मे लाकर छात्रों को जागरूक बनाकर जिससे वे इसमे निर्णायक भूमिका अदा कर सके।
- बच्चो को आस–पास की पर्यावरण से जुडी क्रियाकलापों मे शामिल करा कर।
- विद्यालय और कॉलेज मे औपचारिक शिक्षा माध्यम से विद्यार्थियो के बड़े वर्ग को पर्यावरण से जुड़े क्रियाकलाप के माध्यम से जागरूक किया जा सकता है क्योकि वह विद्यालय/महाविद्यालय में वृक्षारोपण कर, हरी–भरी वाटिकाओं का संरक्षण कर सकता हैं।
- अपशिष्ट पदार्थो, कूड़ों इत्यादि को उपयुक्त स्थान पर रखने की आदत विकसित करना, प्रायः शिक्षित समाज मे आज भी यह कमियाँ दिखायी देती है।
- पार्को के पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूक बनाने की शिक्षा देना।

- गन्दी बस्तियों मे जाकर पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम करवाना जिससे जन सामान्य पर्यावरण से सीख ले सके, सुधार के प्रति सजग हो सके और इसमें सुधारने के लिए सभी वर्ग के लोगो का सहयोग ले सकें।
- पर्यावरण सम्बन्धी फिल्मे, निबन्धो, लेखो एव रिपोर्टो को सूचित करने तथा पूर्व निर्मित सामग्रियों में अपेक्षित सुधार करके।

पर्यावरण प्रदुषण को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा किए गए कुछ उपाए:

- पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली फैक्टरियों के विरूद्ध विशेष अदालतों का गठन।
- तेल शोधक कारखानों को शीशा मुक्त बनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।
- हानिकारक कीटनाशको पर प्रतिबन्ध लगाया गया है।
- राष्ट्रीय कुड़ा प्रबंधन परिषद् का गठन जो शहर के कूड़ा–करकट को उर्जा में और सीवर के मल को उर्वरक में परिवर्तित करता है।
- मोटर वाहनों द्वारा प्रदूषण फैलाने के विरूद्ध प्रदुषण विरोधी अभियान को सख्ती से लागु किया जा रहा है।
- राष्ट्रीय स्तर पर नदी प्राधिकरण बनाने का प्रस्ताव जो राष्ट्रीय स्तर पर जल प्रयोग एवं कूड़ा प्रबंधन के लिए नीति बनाएगा।
- ऊर्जा प्रदुषण को रोकने हेतु सौर उर्जा को बढ़ाने पर जोर दिया गया है।
- सार्वजानिक स्थानों पर धुमपान को निषेध कर दिया गया है।

i;koj.k dh cgqvk;keh ç–fr

पर्यावरण एक बहुविषयक विज्ञान है क्योकि यह भूगोल रसायन भौतिकी चिकित्सा जैसे विभिन्न विषयों पर आश्रित है। यह पर्यावरण में भौतिक घटनाओ का विज्ञान है।

यह स्वभाविक रूप से एक बहुविषयक क्षेत्र है जो केवल अपने मूल वैज्ञानिक क्षेत्रों को आकर्षित करता है। रसायन विज्ञान से यह रासायनिक परिवर्तनों का अध्ययन करता है साथ ही मृदा प्रदूषण और जल प्रदुषण का क्षेत्र भी इसमें शामिल है, वहीं भू–विज्ञान से पर्यावरण मृदा, ज्वालामुखी घटनाएँ आदि घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

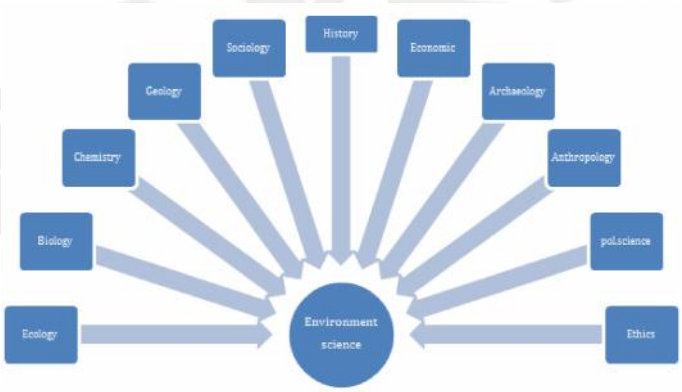

fp= 01% पर्यावरण की बहुआयामी प्रकृति

fu"d"k

पर्यावरण चेतना विकसित करने में विशेष भूमिका पर्यावरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों के गहराई में अध्ययन करने की दृष्टि से छात्रों के प्रति एवं विशेष रूप से समाज के प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक विशेष भूमिका निभा सकता है।

शिक्षक मनोवैज्ञानिक की भाँति छात्रो की संवेदना, कुंठा के प्रति जागरूक होकर एक मित्र की भाँति उनकी विशिष्टताओं को समझकर उपयुक्त संसाधन ढूंढ़कर सामान्य स्थिति मे ला सकता है। धरती पर जीवन के लालन

पालन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। पानी, हवा, पेड़ इत्यादि पर्यावरण के अन्तर्गत आते है। हम सभी ने हमेशा से पर्यावरण के संसाधनो का भरपूर इस्तेमाल किया है। पर्यावरण के अभाव में जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है। हमें भविष्य मे जीवन को बचाये रखने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा को सुनिश्चित करना होगा, यह पृथ्वी पर निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। पर्यावरण हमारे लिए अनमोल हैं उसने हमे बहुत कुछ दिया है। पर्यावरण के कारण ही हम जीवित रह सकते है। पर्यावरण हमारा जीवन है, इसालिए पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए जिम्मेदारी हमे निभानी होगी। प्राकृतिक संसाधनो का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। आओ संकल्प खुद से करे, हरियाली से नाता जोड़े।

lanHkZ lwph

1. वार्षिक रिर्पोट, (2005), पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. हुसैन माजिद, (2020) *पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी,* जी.के. पब्लिकेशन लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण (2005) एस. सी.ई. आर. टी. छत्तीसगढ़, रायपुर।
4. वर्मा. एल. एन. (2014) *पर्यावरण अध्ययन,* राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर राजस्थान।

****